# भारत – स्विटजरलैंड संबंध

## राजनीतिक संबंध

भारत और स्विटजरलैंड के बीच तभी से मैत्रीपूर्ण एवं सौहार्दपूर्ण संबंध हैं जब से भारत आजाद हुआ है। यह संबंध लोकतंत्र, बहु सांस्कृतिकवाद तथा कानून का शासन जैसे साझे मूल्यों पर आधारित है। स्वतंत्र भारत की गुटनिरपेक्षता की नीति तथा स्विटजरलैंड की तटस्थता की परंपरागत नीति में दोनों देशों के नेताओं के बीच घनिष्ठ समझ के विकास में मदद की। 14 अगस्त 1948 को नई दिल्ली में भारत और स्विटजरलैंड के बीच मैत्री संधि पर हस्ताक्षर हुआ जो स्वतंत्र भारत द्वारा हस्ताक्षरित इस प्रकार की पहली संधियों में से एक है। इस संधि में दोनों देशों के बीच राजनयिक मिशनों के गठन का प्रावधान था तथा इस संधि के होने के शीघ्र बाद ही दिल्ली एवं बर्ने में मिशन खोले गए। स्विटजरलैंड ने मुंबई एवं बंगलौर में अपना कोंसुलेट जनरल स्थापित किया। भारत का कोंसुलेट जनरल जेनेवा में है। वर्ष 2008 के दौरान भारत और स्विटजरलैंड ने मैत्री संधि पर हस्ताक्षर होने की 60वीं वर्षगांठ मनाई जो भारत - स्विटजरलैंड द्विपक्षीय संबंधों के दायरे में एक महत्वपूर्ण मील पत्थर है। पिछले छः दशकों में बहुआयामी द्विपक्षीय संबंध के विकास को स्वीकार करते हुए तथा परस्पर हित एवं सहयोग के भावी क्षेत्रों को रेखांकित करने के लिए भारत और स्विटजरलैंड ने आपस में एक विशेषाधिकार साझेदारी स्थापित करने के लिए सहमति व्यक्त करके द्विपक्षीय संबंध को एक नई एवं उच्चतर ऊंचाई पर ले जाने का निर्णय लिया है।

## उच्च स्तरीय यात्राएं

हाल के वर्षों में उच्च स्तर पर यात्राओं के आदान प्रदान से द्विपक्षीय सहयोग को सुदृढ़ करने में सहयोग प्राप्त हुआ है। 1998 में स्विटजरलैंड के तत्कालीन राष्ट्रपति श्री फ्लैवियो कोट्टी की यात्रा स्विटजरलैंड के किसी राष्ट्रपति की ओर से भारत की पहली यात्रा थी। इसके बाद स्विस संघ के राष्ट्रपति श्री पास्कल काउचपिन ने 6 से 12 नवंबर 2003 के दौरान भारत का राजकीय दौरा किया। स्विटजरलैंड की ओर से भारत की पिछली उच्च स्तरीय यात्रा स्विटजरलैंड की राष्ट्रपति श्रीमती मिचेलिन कैल्मी रे ने की थी, जिन्होंने 5 से 7 नवंबर 2007 के दौरान भारत का दौरा किया। मई 2005 में राष्ट्रपति डा. ए पी जे अब्दुल कलाम की राजकीय यात्रा के बाद भारत के राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटील ने 30 सितंबर से 4 अक्टूबर 2011 के दौरान स्विटजरलैंड का दौरा किया।

इसके अलावा मंत्री स्तर पर नियमित रूप से आदान प्रदान होते रहे हैं। आर्थिक कार्य, शिक्षा एवं अनुसंधान के लिए संघीय काउंसिलर श्री जोहान शेनिडर - अम्मान ने 15 से 17 मई 2015 के दौरान भारत का दौरा किया तथा 25 कारोबारी प्रतिनिधियों, संघीय एवं कैंटोनल अधिकारियों तथा संसद सदस्य के एक आर्थिक मिशन का नेतृत्व किया। दिल्ली में उन्होंने माननीय वित्त मंत्री, वाणिज्य एवं उद्योग राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और कौशल विकास एवं उद्यमशीलता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) के साथ बैठकें की। उन्होंने एक कारोबारी बैठक में भी भाग लिया जिसका बंदोबस्त फिक्की द्वारा किया गया था। वह बंगलौर भी गए जहां उन्होंने आधिकारिक तौर पर सी टी आई मार्केट इंट्री का उद्घाटन किया जो प्रौद्योगिकी एवं नवाचार के लिए स्विस सरकार के मिशन की एक पहल है तथा जिसका प्रबंधन स्विसनेक्स इंडिया द्वारा किया जा रहा है और इसका उद्देश्य भारतीय बाजार में पैठ बनाने के लिए स्विस स्टार्ट अप को प्रोत्साहित करना है। आर्थिक मामलों के लिए स्विस संघीय काउंसिलर श्री जोहान एन सिनिडर अम्मान ने एक उच्च स्तरीय कारोबारी शिष्टमंडल के साथ 7 से 9 अप्रैल 2011 के दौरान भारत का दौरा किया। स्विस संघीय काउंसिलर एलेन बेर्सेट ने 1 से 3 अक्टूबर 2012 के दौरान भारत का दौरा किया तथा स्वास्थ्य, संस्कृति तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग का दायरा बढ़ाने के लिए स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री गुलाम नबी आजाद, संस्कृति मंत्री कुमारी शैलजा तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री श्री वायलार रवि से मुलाकात की। स्विस संघीय काउंसलर डोरिस ल्यूथार्ड ने मुख्य रूप से हैदराबाद में जैविक विविधता पर यू एन सम्मेलन में स्विटजरलैंड का प्रतिनिधित्व करने के लिए 18 से 20 अक्टूबर 2012 के दौरान भारत का दौरा किया। उन्होंने पर्यावरण एवं वन मंत्री श्रीमती जयंती नटराजन; नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री डा. फारुक अब्दुल्ला; सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री श्री सी पी जोशी; शहरी विकास मंत्री श्री कमल नाथ; और नागर विमानन मंत्री श्री अजीत सिंह से मुलाकात की और आपसी हित एवं सहयोग के मुद्दों पर चर्चा की। अगस्त 2010 में विदेश मंत्री कैल्मिरे की यात्रा के दौरान दोनों देशों के बीच संशोधित दोहरा कराधान करार के प्रोटोकॉल पर भी हस्ताक्षर किया गया, जो 7 अक्टूबर 2011 को लागू हुआ। स्विस विदेश मंत्री डिडियर बुर्खाल्टर ने नई

दिल्ली में असेम विदेश मंत्री बैठक के सिलसिले में 11 से 12 नवंबर 2013 के दौरान भारत का दौरा किया। इस यात्रा के दौरान श्री बुर्खाल्टर ने विदेश मंत्री से शिष्टाचार मुलाकात की।

भारत की ओर से मंत्री स्तर पर अनेक महत्वपूर्ण यात्राएं हुई हैं। सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री श्री कमल नाथ के नेतृत्व में एक 5 सदस्यीय शिष्टमंडल ने 11 से 12 अगस्त 2009 के दौरान स्विटजरलैंड का दौरा किया। कपड़ा मंत्री श्री दयानिधि मारन के नेतृत्व में एक चार सदस्यीय शिष्टमंडल ने 25 से 28 अक्टूबर 2009 के दौरान स्विटजरलैंड का दौरा किया। संसदीय कार्य एवं जल संसाधन मंत्री श्री पवन कुमार बंसल के नेतृत्व में एक 18 सदस्यीय भारतीय संसदीय सद्भावना शिष्टमंडल ने 1 से 4 अप्रैल 2010 के दौरान स्विटजरलैंड का दौरा किया। श्रीमती लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती मीरा कुमार के नेतृत्व में एक शिष्टमंडल ने बर्ने में अंतर संसदीय संघ (आई पी यू) के महिला संसद अध्यक्षों की छठवीं वार्षिक बैठक में भाग लेने के लिए 16 से 17 जुलाई 2010 के दौरान स्विटजरलैंड का दौरा किया। इसके बाद उन्होंने 16 से 19 अक्टूबर 2011 के दौरान 125वीं आई पी यू बैठक में भाग लेने के लिए बर्ने का दौरा किया। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री श्री आनंद शर्मा की यात्रा के दौरान 8 अप्रैल 2013 को जेनेवा में एक निवेश गोलमेज का आयोजन किया गया। खेल एवं युवा कार्यक्रम राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री जितेन्द्र सिंह ने अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति के साथ एक बैठक के संबंध में 14 से 15 मई 2013 को लौसाने का दौरा किया। विदेश मंत्री श्री सलमान खुर्शीद के नेतृत्व में भारतीय शिष्टमंडल ने 22 जनवरी 2014 को मोंट्रेक्स में सीरिया पर आयोजित जेनेवा 2 सम्मेलन में भाग लिया।

माननीया लोकसभा अध्यक्षा श्रीमती सुमित्रा महाजन के नेतृत्व में एक उच्च स्तरीय संसदीय शिष्टमंडल ने 12 से 16 अक्टूबर 2014 के दौरान जेनेवा में आयोजित अंतर संसदीय संघ (आई पी यू) असेंबली के 131वें सत्र में भाग लिया। इस शिष्टमंडल में प्रो. पी जे कुरियन, माननीय उप सभापति, राज्य सभा तथा पांच संसद सदस्यों के अलावा संसदीय सचिवालय के वरिष्ठ अधिकारी भी शामिल थे। इससे पूर्व माननीय लोकसभा अध्यक्ष ने महिला संसद अध्यक्षों की नौवीं वार्षिक बैठक में भाग लेने के लिए 4 और 5 सितंबर 2014 को जेनेवा का दौरा किया था। उनके नेतृत्व में एक उच्च स्तरीय संसदीय शिष्टमंडल ने 17 से 21 अक्टूबर 2015 के दौरान जेनेवा में आयोजित अंतर संसदीय संघ (आई पी यू) असेंबली के 133वें सत्र में भाग लिया।

आधिकारिक यात्राओं में विदेश सचिव डा. एस जयशंकर ने द्विपक्षीय सहयोग को सुदृढ़ करने के विभिन्न तरीकों पर स्विटजरलैंड के विदेश मामलों के लिए स्टेट सेक्रेटरी श्री यवेस रोसियर के साथ चर्चा के लिए 10 से 13 सितंबर 2015 तक स्विटजरलैंड का दौरा किया। उन्होंने आर्थिक मामलों के लिए स्टेट सेक्रेटरी के साथ भी चर्चा की। बर्न में 18 सितंबर 2015 को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी पर आयोजित भारत - स्विटजरलैंड संयुक्त समिति की तीसरी बैठक में भाग लेने के लिए प्रोफेसर आशुतोष शर्मा, सचिव, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग ने 16 से 19 सितंबर 2015 के दौरान स्विटजरलैंड का दौरा किया। सचिव (डी एस टी) ने शिक्षा, अनुसंधान एवं नवाचार के लिए राज्य सचिवालय में स्टेट सेक्रेटरी मौरो डेल एम्ब्रोगियो के साथ बैठक की सह अध्यक्षता की। बैठक में द्विपक्षीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी सहयोग की समीक्षा की गई तथा सहयोग को मजबूत करने के लिए उपायों का प्रस्ताव किया गया। कौशल विकास एवं उद्यमशीलता मंत्रालय के अंतर्राष्ट्रीय सहयोग प्रभाग के एक शिष्टमंडल ने कौशल विकास के क्षेत्र में दोनों देशों के बीच सहयोग के तौर तरीकों पर एक अध्ययन दौरा सह चर्चा के लिए 31 अगस्त से 8 सितंबर 2015 के दौरान स्विटजरलैंड का दौरा किया। आधिकारिक चर्चा में दोनों पक्ष एक एम ओ यू करने पर सहमत हुए जिसमें एक संयुक्त कार्यसमूह की स्थापना तथा कौशल विकास में द्विपक्षीय सहयोग को आगे बढ़ाने के लिए वित्त पोषण तंत्र के लिए विशिष्ट प्रावधान होंगे। खेल विभाग में सचिव श्री अजीत मोहन शरन ने भारत में खेल के विकास पर प्रधानमंत्री के विजन पर चर्चा करने के लिए 27 अप्रैल 2015 को भारत के माननीय प्रधानमंत्री के साथ अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आई ओ सी) के अध्यक्ष श्री थामस बाच के नेतृत्व में आने वाले शिष्टमंडल की प्रस्तावित बैठक के लिए तौर तरीके तैयार करने के लिए 23 से 25 मार्च 2015 के दौरान लौसाने (स्विटजरलैंड) का दौरा किया। अंतर्राष्ट्रीय राज्य परिषद सचिवालय के सचिव श्री एच के दास ने फोरम आफ फेडरेशंस की बोर्ड बैठक में भाग लेने के लिए 15 से 19 मार्च 2015 के दौरान स्विटजरलैंड में बर्न और लेंजबर्ग का दौरा किया। राजस्व सचिव श्री शक्तिकांत दास के नेतृत्व में एक भारतीय शिष्टमंडल ने स्विस वित्त राज्य मंत्री श्री जैक्स डे वाटेविले के साथ कर से जुड़े मुद्दों पर सूचना साझा करने के सिलसिले में बात करने के लिए 15 अक्टूबर 2014 को स्विटजरलैंड का दौरा किया।

1990 के दशक के पूर्वार्ध से ही उच्च स्तरीय भारतीय शिष्टमंडल विश्व आर्थिक मंच (डब्ल्यू ई एफ) में भाग लेते रहे हैं।

डब्ल्यू ई एफ 2015 (जनवरी 2015) में माननीय वित्त मंत्री श्री अरुण जेटली के नेतृत्व में भारत के आधिकारिक शिष्टमंडल ने डब्ल्यू ई एफ बैठक में भाग लिया जिसमें माननीय विद्युत, कोयला एवं नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री पीयूष गोयल और महाराष्ट्र के माननीय मुख्य मंत्री श्री देवेन्द्र जी फड़नवीस शामिल थे। आंध्र प्रदेश के माननीय मुख्य मंत्री श्री एन चन्द्र बाबू नायडू ने भी आमंत्रिती के रूप में डब्ल्यू ई एफ बैठक में भाग लिया और सचिव (आई पी पी), डी आई पी पी, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, मुख्य आर्थिक सलाहकार, आर्थिक कार्य विभाग ने भी आमंत्रिती के रूप में इस बैठक में भाग लिया। भारतीय उद्योग की विशाल उपस्थिति थी तथा 99 भारतीय कंपनियों ने भाग लिया जिसमें से 55 कंपनियों का प्रतिनिधित्व शीर्ष स्तर द्वारा किया गया। आई बी ई एफ का मेक इन इंडिया लांज काफी लोकप्रिय रहा तथा यहां पर अनेक बैठकें हुईं। बैठक में सी आई आई का भी प्रतिनिधित्व तगड़ा था। डब्ल्यू ई एफ 2015 के दौरान अतिरिक्त समय में माननीय वित्त मंत्री ने स्विटजरलैंड की संघीय वित्त काउंसिलर सुश्री एवलिन विडमेर - शलम्फ तथा संघीय अर्थ काउंसिलर श्री जोहन शेनिडर - अम्मान के साथ द्विपक्षीय बैठकें की। माननीय वित्त मंत्री ने नीदरलैंड की महारानी मैक्सिमा, न्यूजीलैंड के प्रधानमंत्री श्री जान के, यू एस के वित्त मंत्री तथा ब्रिटेन के राजकोष चांसलर के साथ भी द्विपक्षीय बैठकें की। उन्होंने अनेक बहुराष्ट्रीय कंपनियों एवं बैंकों के प्रमुखों के साथ द्विपक्षीय बैठक भी की। विद्युत, कोयला तथा नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री पीयूष गोयल ने संघीय पर्यावरण, परिवहन, ऊर्जा एवं संचार काउंसिलर सुश्री डोरिस ल्यूथार्ड के साथ द्विपक्षीय बैठक की। भारतीय शिष्टमंडल ने सी आई आई द्वारा आयोजित एक ''भारत निवेश गोलमेज'' में भी भाग लिया जिसमें भारी संख्या में कारपोरेट तथा कंपनी प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

भारत बासेल एवं जेनेवा में आयोजित वार्षिक व्यापार प्रदर्शनियों में नियमित रूप से भाग लेता रहा है। भारत अगस्त 2011 में जेनेवा महोत्सव में मेहमान देश था। अप्रैल 2012 में भारत ने मेहमान देश के रूप में बासेल में मूबा फेयर में भाग लिया। मूबा 2012 में भारतीय मंडप के उद्घाटन के अवसर पर स्विस संघीय काउंसलर उली मौरेर मौजूद थे। मार्च 2015 में भारत ने आई टी पी ओ के तत्वावधान में मुबा फेयर तथा जी जे ई पी सी के तत्वावधान में बेसलवर्ल्ड 2015 में भाग लिया। ई पी एफ एल, लौसाने के साथ मिलकर भारत - स्विटजरलैंड व्यवसाय फोरम ने 19 और 20 नवंबर 2015 को ई पी एफ एल, लौसाने में भारत - स्विटजरलैंड नवीकरणीय ऊर्जा गोष्ठी का आयोजन किया। माननीय विद्युत, कोयला, नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री श्री पीयूष गोयल ने एक वीडियो संदेश के माध्यम से प्रतिभागियों को संबोधित किया।

**द्विपक्षीय संस्थानिक व्यवस्थाएं**

(1) विदेश कार्यालय परामर्श (एफ ओ सी) की शुरुआत जनवरी 1996 में हुई। तब से फरवरी 2000, जनवरी 2003, सितंबर 2005, नवंबर, 2006, जनवरी, 2008, दिसंबर, 2009 एवं दिसंबर, 2012 में वैकल्पिक तौर पर क्रमश: बर्ने एवं नई दिल्ली में विदेश कार्यालय परामर्श के 8 चक्र आयोजित हो चुके हैं। संयुक्त सचिव के स्तर पर पिछले विदेश कार्यालय परामर्श का आयोजन 17 से 18 नवंबर 2014 के दौरान नई दिल्ली में हुआ।

(2) भारत - स्विस संयुक्त आर्थिक आयोग का गठन 1959 में किया गया, जिसका उद्देश्य आर्थिक एवं वाणिज्यिक संबंधों को गहन करना है। जे ई सी बैठक के 13वें सत्र का आयोजन 4 - 5 अक्टूबर 2012 को नई दिल्ली में हुआ। जे ई सी की 14वीं बैठक 14 मई 2015 को नई दिल्ली में हुई, जिसकी सह अध्यक्षता भारत की ओर से श्री डम्मू रवी, संयुक्त सचिव (विदेश व्यापार - यूरोप), वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय तथा स्विटजरलैंड की ओर से आर्थिक मामलों के लिए राज्य सचिवालय में द्विपक्षीय आर्थिक संबंधों की प्रमुख श्रीमती लीविया ल्यू अगोस्टी द्वारा की गई।

(3) स्विस - भारत चैंबर ऑफ कामर्स का गठन 1985 में ज्यूरिख में किया गया। यह दोनों देशों में व्यवसाय, व्यापार एवं कारोबार को बढ़ावा देने के लिए नियमित रूप से सेमिनारों, गोष्ठियों एवं बैठकों का आयोजन करता है। जुलाई 2009 में एस आई सी सी ने सी आई आई एवं फिक्की के साथ दो अलग एम ओ यू पर हस्ताक्षर किया। अप्रैल 2013 में जेनेवा में सी आई आई एवं एस आई सी सी द्वारा एक निवेश गोलमेज का आयोजन किया गया।

(4) विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी पर भारत - स्विस संयुक्त समिति : विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी पर भारत - स्विस संयुक्त समिति की पहली बैठक 23 सितंबर 2011 को बर्ने में हुई। इस बैठक का मुख्य उद्देश्य भारत - स्विस संयुक्त अनुसंधान कार्यक्रम के तहत भारत एवं स्विटजरलैंड के बीच विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में चल रहे सहयोग का मूल्यांकन करना था। 1 अक्टूबर 2012 को समिति ने नई दिल्ली में चर्चा का आयोजन किया। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी पर संयुक्त समिति की तीसरी बैठक 18 सितंबर 2015 को सचिव स्तर पर बर्न में हुई।

(5) भारत - स्विटजरलैंड वित्तीय वार्ता : राजकीय यात्रा के दौरान 3 अक्टूबर 2011 को एम ओ यू पर हस्ताक्षर किया गया। पहली वित्तीय वार्ता का आयोजन 6 जुलाई 2012 को बर्ने में हुआ। भारतीय शिष्टमंडल का नेतृत्व आर्थिक कार्य विभाग में सचिव श्री गोपालन द्वारा किया गया तथा स्विस शिष्टमंडल का नेतृत्व राजदूत माइकल एमभुल ने किया। दूसरी वित्तीय वार्ता नई दिल्ली में जून 2013 में हुई।

(6) स्थानीय शासन में परस्पर सहयोग पर एम ओ यू : 12 दिसंबर, 2011 को भारत और स्विटजरलैंड के बीच एम ओ यू पर हस्ताक्षर किया गया।

(7) भारत के विद्युत मंत्रालय और स्विस विकास सहयोग एजेंसी के बीच एक एम ओ यू पर हस्ताक्षर 18 नवंबर 2011 को हुआ, जिसका उद्देश्य ऊर्जा दक्षता में सहयोग करना है।

(8) भारतीय अध्ययन पर 'रवीन्द्रनाथ टैगोर चेयर' स्थापित करने पर एक एम ओ यू पर 4 अक्टूबर 2011 को हस्ताक्षर किया गया। इस एम ओ यू के अनुसरण में आई सी सी आर पीठ के लिए एक हिंदी प्रोफेसर प्रतिनियुक्त करता आ रहा है तथा 2015 में जनवरी से जून तक पीठ का चौथा सत्र पूरा हो गया। यह एम ओ यू फिलहाल संशोधन के अधीन है।

(9) उपर्युक्त के अलावा भारत और स्विटजरलैंड ने निवेश संवर्धन एवं संरक्षण, हवाई सेवा, जैव प्रौद्योगिकी में सहयोग तथा आपदा प्रबंधन में सहयोग पर करारों पर हस्ताक्षर किया है।

(10) संस्थानिक सहयोग के लिए फरवरी 2012 में भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद तथा लौसाने विश्वविद्यालय के बीच एक एम ओ यू पर हस्ताक्षर किया गया।

**वाणिज्यिक संबंध :**

भारत और स्विटजरलैंड के बीच वाणिज्यिक संपर्क 19वीं शताब्दी के पूर्वार्ध से ही चले आ रहे हैं जब 1851 में वोल्कार्ट ट्रेडिंग कंपनी ने बासेल एवं मुंबई में अपने कार्यालय स्थापित किए थे। भारत में स्विटजरलैंड की आर्थिक मौजूदगी का मुख्य अवलंब बनने के शीघ्र बाद इसने भारत में अपनी गतिविधियों में विविधता लाकर अपने नेटवर्क का विस्तार किया। भारत - स्विटजरलैंड मैत्री संधि ने द्विपक्षीय संबंध के लिए एक मजबूत आर्थिक अंतर्वस्तु की नींव रखी। इस संधि के अनुच्छेद 3 से 6 के तहत स्विटजरलैंड को ''सर्वाधिक मनपसंद विदेशी राष्ट्र संव्यवहार'' प्रदान किया गया है। जैसा कि स्वयं संधि में प्रावधान है, इसने और संधियों जैसे कि नवंबर 1994 में दोहरा कराधान संधि का मार्ग प्रशस्त किया, जिसके बाद 2010 में संशोधन के जरिए प्रोटोकॉल को संशोधित किया गया, 1997 में निवेश संवर्धन एवं संरक्षण संधि की गई। भारत में स्विस कंपनियों द्वारा पहला प्रमुख निवेश 1950 के दशक के मध्य में आया। स्विटजरलैंड यूरोपीय संघ के बाहर भारत के लिए एक महत्वपूर्ण व्यापार साझेदार है।

**द्विपक्षीय व्यापार**

***(मिलियन स्विस फ्रैंक में)***

| *वर्ष* | *2009* | *2010* | *2011* | *2012* | *2013* | *2014* | *2015 जनवरी - नवंबर* |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| भारत का निर्यात | 800.1 | 1010.4 | 1303.4 | 1400 | 1524 | 1615.4 | 1171 |
| भारत का आयात | 2156.1 | 2156.4 | 2986.4 | 2600 | 2010 | 1742.0 | 1608 |
| **कुल व्यापार** | **2956.2** | **3166.8** | **4289.8** | **4000** | **3534** | **3357.4** | **2779** |

भारत - स्विस द्विपक्षीय व्यापार 2004 में 1.6 बिलियन अमरीकी डालर से लगभग तीन गुना बढ़कर वर्ष 2011 में 4.5 बिलियन अमरीकी डालर हो गया। भारत को स्विस निर्यात में हाल के वर्षों में प्रतिकूल विनिमय दर तथा भारतीय अर्थव्यवस्था में मंदी के कारण गिरावट आई है। भारत का पण निर्यात 2009 की तुलना में 2014 में दोगुने से भी अधिक हो गया है। भारत ने 2009 में 800.1 मिलियन सी एच एफ मूल्य के माल का निर्यात किया था जो 2014 में बढ़कर 1615.4 सी एच एफ हो गया। स्विटजरलैंड के सीमा शुल्क विभाग के ब्यौरों के अनुसार द्विपक्षीय व्यापार 2014 (कलेंडर वर्ष - जनवरी से दिसंबर) में 3357.4 मिलियन सी एच एफ था जो 2013 की तुलना में 5 प्रतिशत की गिरावट को दर्शाता है, जिसमें भारत को स्विस निर्यात में 13.3 प्रतिशत की गिरावट के साथ 2014 में कुल 1742 मिलियन सी एच एफ था, जबकि 2013 में यह 2010 सी एच एफ था। तथापि पिछले वर्ष की तुलना में 2014 में स्विटजरलैंड को भारतीय निर्यात में 6 प्रतिशत की वृद्धि हुई (2013 में 1524 मिलियन सी एच एफ की तुलना में 1615 मिलियन सी एच एफ)। स्विटजरलैंड के सीमा शुल्क विभाग द्वारा भारत द्वारा स्विटजरलैंड में निर्यात के जो आंकड़े दिए गए हैं उसमें भारतीय साफ्टवेयर एवं सेवा निर्यात के आंकड़े शामिल नहीं हैं। इसी तरह स्विटजरलैंड द्वारा निर्यात के आंकड़ों में भारत को बुलियन निर्यात एवं युद्ध सामग्री के निर्यात के आंकड़े शामिल नहीं हैं। इलेक्ट्रानिक एवं कंप्यूटर साफ्टवेयर निर्यात संवर्धन परिषद के अनुसार 2013-14 के दौरान भारत ने 201.11 मिलियन अमरीकी डालर मूल्य के कंप्यूटर साफ्टवेयर एवं सेवाओं का निर्यात स्विटजरलैंड को किया जबकि 2012-13 में इस निर्यात का मूल्य 369.86 मिलियन अमरीकी डालर और 2011-12 में 433.98 मिलियन अमरीकी डालर था। 2012-13 में 56.57 मिलियन अमरीकी डालर की तुलना में 2013-14 में भारत के इलेक्ट्रानिक हार्डवेयर के निर्यात का मूल्य 34.90 मिलियन अमरीकी डालर था। वर्ष 2014 में स्विटजरलैंड के बुलियन के निर्यात का मूल्य 17.55 बिलियन सी एच एफ था जबकि 2013 में इसका मूल्य 21.9 बिलियन सी एच एफ था।

व्यापार संतुलन स्विटजरलैंड के पक्ष में बना हुआ है। स्विटजरलैंड को भारतीय निर्यात की प्रमुख वस्तुओं में शामिल हैं - कपड़ा एवं परिधान, कार्बनिक रसायन, बहुमूल्य पत्थर एवं आभूषण, डाई स्टफ, मशीनरी एवं पार्ट्स, चमड़ा उत्पाद, शूज एवं शूज अपर्स, कॉटन, प्लास्टिक, कॉफी, चाय एवं हाथ से बुने गलीचे। बुलियन के अलावा भारत को स्विस निर्यात के तहत भेषज पदार्थ, मशीनरी, परिवहन उपकरण, रासायनिक उत्पाद तथा घड़ियां शामिल हैं।

अप्रैल 2000 से सितंबर 2015 तक स्विटजरलैंड ने भारत में एफ डी आई के रूप में लगभग 3.18 बिलियन अमरीकी डालर का निवेश किया और इस प्रकार इस अवधि के दौरान भारत में 11वां सबसे बड़ा निवेशक बन गया और कुल एफ डी आई में इसका अनुपात लगभग 1.2 प्रतिशत था। जैसा कि भारत में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश का एक बड़ा भाग अन्य देशों से चलकर आता है, भारत में वास्तविक स्विस प्रत्यक्ष निवेश काफी अधिक है, भारत में समग्र स्विस निवेश अंत:प्रवाह जून 2013 तक 6.8 बिलियन अमरीकी डालर से भी अधिक हो सकता है। अपनी स्वयं की सहायक कंपनियों एवं संयुक्त उद्यमों के माध्यम से 220 से अधिक स्विस कंपनियों की भारत में उपस्थिति है। अधिकांश स्विस बहुराष्ट्रीय कंपनियों जैसे कि नेसले, ए बी बी, नोवारटिस, रोच यू बी एस तथा क्रेडिट स्विस आदि के प्रचालन भारत में हैं। स्विटजरलैंड सरकार के आंकड़ों के अनुसार, स्विस उद्यमों ने भारत में 1 लाख से अधिक नौकरियों का सृजन किया है। दूसरी ओर, लगभग 100 भारतीय कंपनियों ने स्विटजरलैंड में 2012 से 2014 के बीच 1.2 बिलियन अमरीकी डालर का निवेश किया जिसके आधार पर यह भारतीय निवेशकों के लिए शीर्ष पांच यूरोपीय निवेश डेस्टिनेशन तथा वैश्विक स्तर पर शीर्ष 10 स्थानों में शामिल हो गया है। टी सी एस, इनफोसिस, टेक महिंद्रा आदि जैसी प्रमुख भारतीय आई टी कंपनियों के यहां कार्यालय हैं तथा वे प्रमुख फार्मा कंपनियों, बैंकों एवं बीमा फर्मों को अपनी सेवाएं प्रदान करती हैं। हाल ही में यूरेका फोर्ब्स द्वारा स्विस लग्जरी गुड्स फर्म लक्स का अधिग्रहण किया गया तथा इससे पहले 2010 में एच सी सी लिमिटेड द्वारा मैसर्स स्टीनर नामक एक निर्माण कंपनी का अधिग्रहण किया गया। जीवन विज्ञान तथा फार्मा क्षेत्र में भी भारतीय कंपनियों की मौजूदगी है।

26 जनवरी, 2008 को दावोस में अपनी बैठक में भारत एवं यूरोपीय मुक्त व्यापार क्षेत्र (ई एफ टी ए), जिसमें आइसलैंड, लिकिस्टीन, नार्वे एवं स्विटजरलैंड शामिल हैं, के वाणिज्य / व्यापार मंत्री 1 दिसंबर 2006 को स्थापित संयुक्त ई एफ टी ए - भारत अध्ययन समूह की सिफारिशों के अनुसार एक व्यापक व्यापार एवं निवेश करार पर वार्ता शुरू करने के लिए सहमत हुए। भारत - ई एफ टी ए व्यापार वार्ता के 13 चक्रों का आयोजन हुआ है तथा पिछले चक्र का आयोजन नई दिल्ली में नवंबर 2013 में हुआ।

**सांस्कृतिक संबंध :**

वेसेनहौसप्लाट्ज में बर्न के सिटी सेंटर में तथा संस्कृति केन्द्र, गैसोमीटर, लिचिस्टीन में 21 जून 2015 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस (आई डी वाई) मनाया गया जिसमें क्रमश: लगभग 100 एवं 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया। स्टिजरलैंड के अन्य शहरों जैसे कि ज्यूरिख, बर्न और बाडेन में भी विभिन्न योग स्कूलों के तत्वावधान में बड़े पैमाने पर योगाभ्यास का आयोजन किया गया जिसमें से प्रत्येक स्थान पर 30 से 40 व्यक्तियों ने भाग लिया। बर्न में आयोजित कार्यक्रम में सुश्री वांग सूरी थमस सुसैन जो पी आई ओ तथा लेजिस्लेटिव असेंबली की सदस्य हैं, सोलोथर्न का कैंटोन हैं, ने भाग लिया।

पुणे आधारित नृत्य भारतीय अकादमी से श्रीमती अरुणा केलकर के नेतृत्व में एक 10 सदस्यीय कथक नृत्य मंडली, जिसे आई सी सी आर द्वारा प्रायोजित किया गया था, ने 24 से 26 मार्च 2015 के दौरान स्विटजरलैंड का दौरा किया और बर्न एवं ज्यूरिख में अपनी कला का प्रदर्शन किया। शो की बहुत सराहना हुई।

सुश्री रुजता सोमन के नेतृत्व में आई सी सी आर द्वारा प्रायोजित एक 6 सदस्यीय कत्थक मंडली ने 16 मई 2014 को ज्यूरिख में कत्थक पर आयोजित अभिनय एवं व्याख्यान प्रदर्शन में भाग लेने के लिए स्विटजरलैंड का दौरा किया।

**भारतीय समुदाय :**

स्विटजरलैंड में भारतीय समुदाय के तहत तकरीबन 18,000 भारतीय हैं जिसमें 6300 से अधिक भारतीय मूल के व्यक्ति (जिनके पास स्विस पासपोर्ट है) शामिल हैं। इनमें से अधिकांश इंजीनियरिंग, आई टी, भेषज पदार्थ तथा पैरामेडिकल जैसे क्षेत्रों में पेशेवर हैं। भारतीय समुदाय के कुछ लोग यू एन, यू पी यू जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों तथा अन्य प्रतिष्ठित स्विस संस्थाओं जैसे कि संघीय प्रौद्योगिकीय संस्थान ज्यूरिख तथा ई पी एफ एल, लौसाने में तैनात हैं। भारतीय समुदाय मुख्य रूप से ज्यूरिख, जेनेवा, बासेल, बाडेन, बर्ने एवं लौसाने में इसी क्रम में केन्द्रित है। अनेक भारतीय संघ सक्रिय रूप से सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन करते हैं तथा भारत के राष्ट्रीय दिवसों को मनाते हैं। भारत का एक अवैतनिक कोंसुल जनरल ज्यूरिख में स्थित है।

**उपयोगी संसाधन :**

भारतीय दूतावास, बर्ने की वेबसाइट :
www.indembassybern.ch
स्विटजरलैंड के बारे में सूचना :
https://www.news.admin.ch/
स्विस विदेश मंत्रालय :
http://www.fdfa.ch/eda/en/home.html.html
नई दिल्ली में स्विस दूतावास :
http://www.eda.admin.ch/newdelhi

***

**जनवरी, 2016**